क्षेत्र तैयारी

चन्द्रशूर की फसल रबी सीजन की फसल मानी जाती है। अक्टूबर माह में खेत की जुताई कर पाटा लगाकर इसें समतल किया जाता है। अच्छी उपज के लिए बुवाई के पूर्व 5–7 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद/कम्पोस्ट/ बर्मीकम्पोस्ट खेत की मिट्टी में मिला देना चाहिए।

बुवाई

इसकी बुवाई छिड़काव विधि द्वारा अक्टूबर–नवम्बर माह में की जाती है। कतारों में भी बीज बुवाई की जा सकती है। ऐसी स्थिति में कतारों के बीच की दूरी 25 से 30 से.मी. रखी जा सकती है।

सिंचाई

यद्यपि फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु अच्छी उपज के लिए आवश्यकतानुसार दो से तीन बार सिंचाई करना उपयुक्त होता है।

खरपतवार नियन्त्रण

यह फसल तेजी से बढ़ती है अतः इसमें कम खरपतवार निकलती है। परन्तु आवश्यकतानुसार क्रमशः 3 व 6 सप्ताह बाद एक–एक निंदाई कर देना चाहिए।

रोग एवं कीट नियन्त्रण

इसकी फसल में प्रायः पाउडरी मिल्ड्यू (powdery mildew) नामक बीमारी का प्रकोप देखा गया है, जिसके उपचार हेतु सल्फर डस्ट का छिड़काव लाभकारी होता है।

कटाई (विदोहन)

चंन्द्रशूर की फसल तीन से चार माह में पक कर कटाई के लिये तैयार हो जाती है। जब पत्तियों का रंग हरे से पीला पडने लगे तथा फलो मे बीजो का रंग लाल हो जाये उस समय फसल की कटाई करनी चाहिए। इसके लिए पौधों को हंसिये से काट कर या हाथ से उखाड कर खाली/स्थान में दो–तीन दिन सूखने के लिए डाल दिया जाता है। तत्पश्चात् डंडे से पीटकर या ट्रेक्टर से सिंचाई कर बीज निकाल लिए जाते है।

उपज

प्रति हेक्टेयर 8–10 क्विन्टल बीज प्राप्त होते है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

पादप कार्यिकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

चन्द्रशूर

***Lepidium sativum* (L.)**

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

चन्द्रशूर

***Lepidium sativum* (L.)**

कुल	:	क्रुसीफेरी (ब्रेसिकेसी) Cruciferae (Brassicaceae)
आयुर्वेदिक नाम	:	चन्द्रशूर
व्यापारिक नाम	:	असलिया, चंद्रशूर
अन्य प्रचलित नाम	:	हलीव, हल्सून, असरिया, आलिब, यूफा
अंग्रेजी नाम	:	Common garden cress, Garden puper cress, Pepper wort, Pepper grass, Poor man's pepper
उपयोगी भाग	:	बीज, जड़, पत्तियॉ, तना

चन्द्रसूर एक शाकीय पौधा है, जो 30–60 सेमी. तक ऊंचा होता है। यह श्वेत रंग का, बीज लाल रंग के सरसो जैसे बेलनाकार होता है। यह पाचन तंत्र संबंधी रोग, नेत्र रोग, वात, मूत्रशुद्धि तथा पेचिस को रोकता है।

इसके बीजों में 22.5% प्रोटीन, 27.5% वसा और 30% फाइबर पाया जाता है। साथ ही में कैल्शियम, फोलिक एसिड तथा विटामिन 'ए' तथा 'सी' पाये जाते है। इसकी पत्तियों मे भी प्रोटीन, वसा, कैल्शियम, फॉस्फेट, आयोडीन तथा विटामिन 'ए' पाये जाते है। इसके अलावा विभिन्न प्रकार के अल्केलॉडस, कार्डियोटॉनिक ग्लायकोसाइड्स, कूमारिन्स (Coumarins) इलूकोसाइनोलेट्स, इकोट्रोपायोसिन सेपोनिन्स, स्टेरॉल्स, सिनापिक एसिड, सिनेपाइन, हैकिन्स, ट्राइटर्पीन यूरिक एसिड, अमीनो एसिड्स (ग्लूटामिक एसिड), ल्यूसीन, मैथियोनाइस), फैटी एसिड्स (लिन्डिनिक एसिड, एसेटिक एसिड) यूरिक एसिड तथा बेचाइल आइसोथायो–साइनेट (BITC) आदि भी पाये जाते है।

औषधीय गुण

चन्द्रशूर उच्चरक्त चाप रोधक, मूत्रवर्धक, सूजनरोधी, पीडा धारक, रक्त थक्कारोधी, आमवात नाशक, रक्तशर्करा–रोधी, चेचक, प्रोकाइनेटिक, अतिसाररोधी, ऐंढनरोधी, दमारोधी, क्रामोद्दीपक, श्वसन नली प्रसारक, यकृतरक्षक, कैंसर रोग के उपचार में दी जाने वाली कीमोथेरेपी के दुष्प्रभावों का शमन करने वाला, ज्वरनाशक, विशोधक, दूध पिलाने वाली माताओं के दूध की मात्रा बढ़ाने वाले रक्तशोधक, उत्तेजक तथा एन्टी–ऑक्सीडेन्ट से भरपूर है।

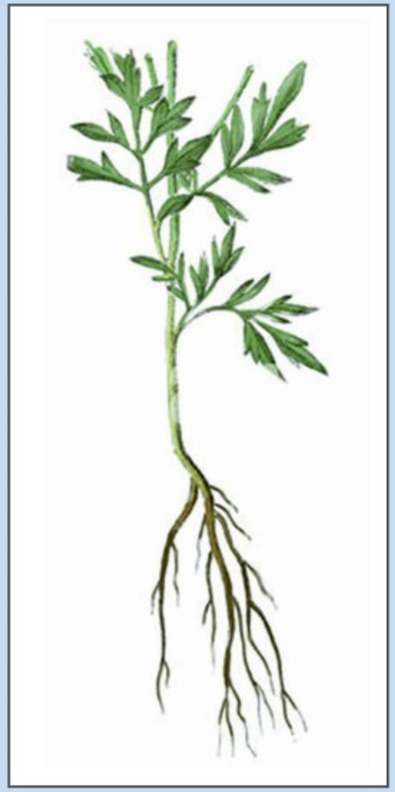

चन्द्रशूर की पत्तियों में अनेक उच्च पोषक द्रव्यों की उपस्थिति के कारण यूरोप, अमेरिका तथा आंस्ट्रेलिया जैसे देशों मे इसे सलाद सूप बनाने में उपयोग किया जाता है। चन्द्रशूर के अंकुरित बीज भी खाये जाते है। यह कैल्शियम, अपरदन, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम तथा विटामिन – 'ए','बी','सी','ई' तथा 'के' का अच्छा स्रोत माना जाता है। उपवर्णित अनेक औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा एवं होम्योपेथी चिकित्सा प्रणालियों में इसका उपयोग अनेक रोगो जैसे – रक्तल्पता, अस्थिभंग, दमा, ब्रॉंकाइटिस छाती की जकड़न, गठिया, सर्दी, खॉसी, कब्ज, विटामिन–'सी' की कमी, पेट दर्द, खूनी बबासीर, ग्रैस्ट्राइटिस, ऐंठन, कमजोर प्रतिरक्षातंत्र शरीर मे तरल पदार्थो के जमाव से उत्पन्न सूजन, कुष्ठरोग, चर्मरोग, तिल्ली वृद्धि, अपच, कटिशूल श्वेत प्रदर तथा मसूढों से रक्त आना के उपचार में किया जाता है। इसके बीजो में पाये जाने वाला लसदार पदार्थ के गम अरेविक के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके बीजो से अनेक मवेशियों तथा इंसानों में दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसके बीजों में वाष्पीय तेल होता है। स्त्रियों में एस्ट्रोजन (सेक्स हारमोन) की कमी दूर होती है। गर्भपात हेतु इसके बीजों को दूध में उबाल कर दिया जाता है। दर्द तथा चोट में इसका प्रलेप (poultice) लगाया जाता है।

वितरण

चंद्रशूर मूलतः इथोपिया (अफ्रीका) तथा भूमध्य समुद्रीय जलवायु के क्षेत्रो का पौधा है। विश्व में यह यूरोप, मिश्र, सूडान, साऊदी अरब, तुर्की, ईरान, ईराक, पाकिस्तान एवं तिब्बत (चीन) में पाया जाता है। भारत वर्ष में मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, मध्यक्षेत्र, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र मे इसे व्यावसायिक रूप से उगाया जाता है।

आकारिकी

इसकी पत्तियों के किनारे चिकने होते है। पौधे के ऊपरी भाग की पत्तियों छोटी नम कीले हरे रंग की तथा पंखो जैसी तथा डंढल रहित होती है। जबकि निचले हिस्से की पत्तियॉ लम्बी तथा डंढल होती है। ऊपरी भाग में अनेक शाखायें होती है। इसके फूल छोटें (लगभग 2 मि.मी. लम्बाई के), सफेद अथवा हल्के गुलाबी रंग के तथा द्विलिंगी होते है। ये गुच्छो में लगते है। इसका फल 4 मि.मी. व्यास का चपटा होता है। बीजों को जल में भिगों कर रखने से ये बुआवदार, बीज मज्जा सफेद होती है तथा बीज कवच चिकना होता है। इस पौधे में कीट द्वारा परागण होता है।

जलवायु एवं मृदा

चंन्द्रशूर रेतीली, दोमट चिकनी सभी प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है। इसकी खेती हल्की तथा कुछ हद तक ऊसर मृदा में भी की जा सकती है। यद्यपि इनमें ऊपज कम होती है। इस पौधे के लिए ठंडी जलवायु अधिक उपयुक्त है। इसे खुले अथवा आंशिक छायादार स्थानों पर लगाया जा सकता है।

कृषि तकनीक

प्रवर्धन सामग्री

बीज प्रति हेक्टेयर 8 से 15 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है।